आभार

इस शोध कार्य को पूरा करने में मेरे अथक प्रयास, अदम्य इच्छाशक्ति के अतिरिक्त कई व्यक्तियों का छोटा-बड़ा योगदान रहा है। उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूं। इस शोध प्रबंध को संपन्न करने में मेरे शोध निर्देशक प्रोफेसर दीपेंद्रसिहं जाडेजा सर को धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूंगी, जिन्होंने समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया, हर ऊंच-नीच में मेरा साथ निभाया। तभी यह कार्य संपन्न हो सका। जिसके लिए मैं सदैव उनकी ऋणी बनी रहूंगी। विभागाध्यक्ष प्रोफेसर कल्पना गवली को मैं कैसे विस्मृत कर सकती हूं? जिन्होंने कदम-कदम पर मेरी सहायता की। इसी के साथ प्रोफ़ेसर ओ.पी.यादव ने भी कदम-कदम पर सहायता की एवं उत्साहवर्धन किया। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा परम कर्तव्य है। विभाग के अन्य प्राध्यापकों में पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर दक्षा मिस्त्री, प्रोफेसर कनुभाई निनामा, डॉ. एन.एस.परमार आदि का मैं हृदयपूर्वक आभार मानती हूं। इन गुरुजनों ने मेरा मार्गदर्शन किया है और मैं उनके मार्गदर्शन से लाभान्वित हुई हूं। इस शोध कार्य के बारे में अधिक जानकारी पाने के लिए मेरी, लेखिका मैत्रेयी पुष्पा से अनेक बार फोन पर बातचीत होती रही। उनके साथ बातें करना बौद्धिक संतोष प्राप्त करने वाला कार्य था। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने लेखन के बारे में बहुत-सी जानकारी दी। उसके लिए मैं उनकी शुक्रगुजार हूं। इन सब के अतिरिक्त इस कार्य में जिन परिवारजनों का सहयोग रहा है, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित न करना कृतघ्नता होगी। पढ़ना-लिखना मेरा हमेशा से शौक रहा है। इस शौक की पूर्ति हेतु और ज्ञानपिपासा की पुष्टि के लिए शिक्षा की यह सर्वोच्च उपाधि प्राप्त करने के लिए किया गया मेरा यह पहला प्रयास, विवाह और उसके बाद की जिम्मेदारियों के कारण सफल रहा। मेरे पिता श्री रवि दत्त की यही इच्छा थी कि उनके तीन बच्चों में से कोई एक हिंदी प्राध्यापक/प्राध्यापिका बने। मैंने आगे की पढ़ाई में हिंदी विषय का चुनाव करके उनकी इस इच्छापूर्ति के लिए प्रयास

किया। पिता श्री रवि दत्त तथा माता श्रीमती नरेश कुमारी की सतत् प्रेरणा से मैं उनका यह स्वप्न पूर्ण करने में सफल रही इसीलिए मैं उनको सादर प्रणाम करती हूं।

इन सबमें मेरे पति अनिल कुमार जी की मुख्य भूमिका रही है जोकि वायु सेना में किसी अन्य स्थान पर कार्यरत होने के बावजूद भी मुझे पी.एच.डी. शोध प्रबंध पूरा करने के लिए महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बडौदा के सरोजनी देवी हॉस्टल में रहने की अनुमति देते हैं तथा उनके ही विश्वास, प्रेम और सहयोग से मैंने अपना पी.एच.डी. शोध प्रबंध खुशी-खुशी संपन्न किया। अगर उनका साथ नहीं होता तो मेरे लिए यह कार्य करना बिल्कुल असम्भव था। मेरे ससुर श्री शंकर दास शर्मा तथा सास श्रीमती सुनीता देवी ने मेरी छ: महीने की बेटी रितांशी शर्मा उर्फ चिक्कु की ज़िम्मेदारियों से मुझे इस शोध कार्य के दौरान मुक्त रखा। रितांशी उर्फ चिक्कु इस कार्य के दौरान मेरे स्नेह से वंचित रही। चंडीगढ़ में स्थित मेरी बड़ी बहन जस्सी बाला ने भी मुझे शोध कार्य पूरा करने के लिए उत्साहित किया। पंजाब में रह रहे मेरे छोटे भाई निखिल कुमार तथा भाभी दीक्षा शर्मा ने भी फोन के माध्यम से शोध कार्य पूरा करने में मेरा हौसला बढ़ाया। इसके साथ ही मेरी मामी सास श्रीमती अंजु देवी ने मुझे फोन के माध्यम से पढ़ाई में रुचि बनाए रखने के ऊपर बल दिया। इन्होंने मुझे तरह-तरह के प्रेरणादायक उदाहरण देकर मुझे अपने कार्य को पूरा करने के लिए उत्साहित किया। इनके सहयोग के लिए मैं उनको धन्यवाद देती हूं। इस शोध कार्य को करने के लिए मुझे देवनागरी में कंप्यूटर टंकण सीखना पड़ा। इस दुष्कर कार्य की अनेक चुनौतियां के दौरान मेरे दोस्त जितेंद्र वाघेला ने मदद करके मेरा बोझ हल्का किया। अत: मैं उनकी आभारी हूं। प्रस्तुत शोध प्रबंध के लिए मैंने अनेकानेक विद्वानों के ग्रंथों का सहारा लिया है। जिसके लिए मैं अपने विश्वविद्यालय के पुस्तकालय हंसा मेहता तथा पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला की भाई कान्ह सिहं नाभा पुस्तकालय के प्रति श्रद्धा भक्ति व्यक्त करना मेरा

सारस्वत धर्म है। अंततः यहां के कला संकाय के पूर्व प्राचार्य प्रोफेसर के. क्रिस्नन साहब एवं वर्तमान प्राचार्य प्रोफेसर आद्या बी. सक्सेना का मैं हृदय से आभार मानती हूं क्योंकि उनके आशीर्वाद और तकनीकी मार्गदर्शन के अभाव में यह कार्य संभव न होता। इन सब के अतिरिक्त इस कार्य में जिनका सहयोग रहा है परन्तु उनका समरण छूटा है, उनके प्रति में आभार प्रदर्शित करती हूं। आशा है कि इस शोध कार्य से मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध को समझने में हिंदी छात्रों और अध्यापकों को सहायता मिलेगी। शोधार्थी की कुछ सीमाएं होती हैं। इस शोध प्रबंध का विस्तार बहुत हुआ। अतः इसमें कुछ त्रुटियां रही होंगी, जिसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूं। अंत में इसे विद्वानजनों को प्रस्तुत करती हूं।

भवदीय

हेम लता